मिस्तरी रामलाल

परिचयात्मक शब्द : हर एक काम को करने के लिए उसकी योजना बनाई जाती है, मिस्तरी से मकान बनवाने के लिए मिस्तरी को मकान का नक्शा मुहैया करवाया जाता है। पुरातन इमारतकारी से लेकर अब तक बनी नई बिल्डिंगें इमारतकारी के बढ़ते कदमों की दास्तान हैं। पर यह एक सुखांत है और दुखांत भी कि आसमान छूती इमारतें बनाने वाले मजदूर अभी भी झोंपड़ियों में ही रहते हैं। उनके नंग-धड़ंग बच्चे सड़कों पर खेलते हैं। उनके झोंपड़ीनुमा घर ईंटों को जोड़कर बनाए होते हैं। उनके घरों की छतें टीन या तिरपाल की होती हैं। दीवारों की कोई नींव नहीं होती। फर्श कच्चे होते हैं और छत मुश्किल से इतनी ऊंची कि आदमी सीधा खड़ा हो सके। आज विश्वकर्मा दिवस पर जहां हम कारीगर, औजारों की पूजा करते हैं, वहीं हमारा फर्ज़ बनता है कि हम सोचें कि आखिर मज़दूरों के रहने को घर क्यों नहीं हैं ? यही इस नाटक का विषय है।

(नाटक शुरू होने पर मिस्तरी का पुत्र मंच पर आता है और दर्शकों को संबोधित करता है।)

पुत्र : मेरा नाम शम्मी गौरव है, आप कहोगे बड़ा फिल्मी हीरो जैसा नाम है... शम्मी कपूर, शम्मी बत्तरा, शम्मी महीपाल, मेरे मां-बाप मुझे शम्मी ही कहते हैं। ये गौरव शब्द अपने नाम के साथ मैंने खुद लगाया है। गौरव का मतलब है, फख़्र, गर्व। यह शब्द मैंने अपने नाम के साथ इसलिए लगाया है ताकि मुझे किसी प्रकार का हीनता बोध न हो। मैं एक राज मिस्तरी का पुत्र हूं। मेरी मां किसी वक्त ईंट ढोने वाली मज़दूर औरत थी। मेरा बाप भी पहले ईंटें ढोता था, फिर धीरे-धीरे मिस्तरी बन गया। बड़ी-बड़ी इमारतें बनाने में उसने काम किया। वह पढ़ा नहीं है, पर अगर उसे नक्शा समझा दो तो वह मुश्किल से मुश्किल काम को भी सिरे चढ़ा लेता है। मेरा बाप एक

ठेकेदार के साथ काम करता है। बहुत सालों से कर रहा है। ठेकेदार से उसकी पटती नहीं, पर यह भी सच है कि ठेकेदार का उसके बिना गुजारा नहीं और उसका ठेकेदार के बिना गुजारा नहीं।

(गौरव एक तरफ से निकल जाता है, ठेकेदार और मिस्तरी बातें करते हुए मंच पर आते हैं।)

ठेकेदार : मिस्तरी रामलाल, टेंडर मंजूर हो गया है, कल से काम शुरू करना है।

मिस्तरी : ठीक है, पर मैंने एक अर्ज़ करनी है।

ठेकेदार : क्या अर्ज़ करनी है ?

मिस्तरी : नया काम शुरू करने से पहले दिहाड़ी के बारे में, काम के घंटों के बारे में और छुट्टी के बारे में फैसला ज़रूरी है।

ठेकेदार : क्यों, पहले कभी मैंने तेरा हक़ मारा है ?

मिस्तरी : पहले तो मैं यही सोचता था कि आप मेरा हक़ कभी नहीं मार सकते, पर जबसे मेरे बेटे ने मुझे समझाया है, मुझे लगने लगा है कि मुझे मेरा हक़ नहीं मिल रहा।

ठेकेदार : क्यों, अब क्या बिल्ली छींक गई ?

मिस्तरी : बिल्ली तो नहीं छींक गई, पर मेरा बेटा कहता है...

ठेकेदार : क्या कहता है ?

मिस्तरी : कहता है, बापू कभी तूने सोचा है कि तूने इतनी बड़ी-बड़ी इमारतें खड़ी कर दी पर तेरे अपने रहने के लिए यही कोठरी क्यों है ? कोठरी भी वो जिसका फर्श कच्चा है। दीवारें भुरभुरा रही हैं, बारिश में छत टपकती है।

ठेकेदार : तो फिर तूने क्या कहा ?

मिस्तरी : मैंने क्या कहना था ?

ठेकेदार : क्यों ? कह देता, जिस तरह लोग कहते हैं कि ये सब तो किस्मत के खेल हैं, ऊपर वाले की ऊपर वाला जानता है, वगैरह... वगैरह, लड़का तेरा कुछ ज़्यादा ही सोचने लगा है। उसे पता नहीं जिस कोठरी में तू रहता है, तेरा बाप भी वहीं रहता था, तेरे बाप का बाप भी वहीं रहता था। वो खैर मनाए कि उसके सिर पर छत है, उसके बाप-दादाओं ने भी इसी तरह गुजारी है, वो भी गुजार ले।

मिस्तरी : पर मेरा लड़का कहता है वो इस तरह नहीं गुजारेगा, जिस तरह मैंने गुजारी है, या मेरे बाप ने गुजारी है या मेरे बाप के बाप ने गुजारी है...

ठेकेदार : *(व्यंग्य से)* क्यों वो डिप्टी लग गया है ?

मिस्तरी : वो कहता है कि जब आदमी को समझ आ जाए तो वह किसी डिप्टी से कम भी नहीं होता, यह बात उसके मास्टरजी ने उसे समझाई है।

ठेकेदार : तो फिर तू अब चाहता क्या है ?

मिस्तरी : मैं यह चाहता हूं कि जब आपकी इस इमारत का निर्माण पूरा हो तो तब तक मैं भी अपना घर बना लूं, सारी सुविधाओं वाला एक घर।

ठेकेदार : सारी सुविधाओं वाला घर ? क्या मतलब ?

मिस्तरी : जिसमें कमरा बेशक एक ही हो, पर उसमें अलग रसोई हो, पर्दे वाला गुसलखाना हो, लेटरीन हो, जो पानी की एक बाल्टी डालने से साफ हो जाए।

ठेकेदार : क्यों, अब तेरी लेटरीन बंद हुई पड़ी है ? निकलती नहीं ?

मिस्तरी : हां, नहीं निकलती।

ठेकेदार : और पर्देवाला गुसलखाना ?

मिस्तरी : हां, मेरे लड़के ने मुझे बताया है और उसे उसके मास्टरजी ने बताया है कि नहाने का मतलब होता है जिस्म के उन अंगों की सफाई जो पर्दा मांगते हैं... भला वो भी कोई नहाना हुआ कि खाट का पर्दा करके धोती उतारे बिना ही पानी का लोटा डालकर शरीर गीला कर लो या अंगोछा बांधकर या निक्कर पहनकर नल के नीचे बैठ जाओ... समझो नहा लिया...

ठेकेदार : ठीक है, ठीक है, इन बातों पर भी विचार करेंगे अभी तो इतना ही है कि कल से तूने काम पर आना है, कोई पेशगी की ज़रूरत हो तो बता।

मिस्तरी : जी, हिसाब करके बताऊंगा कितनी ज़रूरत है।

ठेकेदार : हिसाब ?

मिस्तरी : हां हिसाब, जब आपकी बिल्डिंग की नींव मुकम्मल हो तो मेरे मकान की नींव भी मुकम्मल हो जाए, जब आपकी एक मंज़िल बन जाए तो मेरा कमरा मुकम्मल हो जाए, आपकी दूसरी मंज़िल बने तो मेरे घर का चौबारा भी बन जाए, जहां मेरे लड़के के पढ़ने का इंतज़ाम हो, अब वह रात को पार्क के लैंप के नीचे बैठकर पढ़ता है।

ठेकेदार : अरे कंजर, इमारतसाज़ से तू सपनसाज़ कब से हो गया है ? अपने बेटे का ख्याल रख, वह पार्क में लैंप के नीचे बैठकर पढ़ने नहीं जाता, बल्कि दोस्तों के घर टी.वी. देखने जाता होगा। नंगी मेमों को

नहाते देखता है तभी तो कहता है कि उसके घर में भी गुसलखाना हो, फ्लश वाली लेटरीन हो... *(बात बदलकर)* चलो सब कुछ हो जाएगा, और सुन, बिल्डिंग शुरू करने की खुशी में रात को जश्न होगा... लुधियाना से गाने वाली जोड़ी भी आनी है, तू भी आ जाना... दारू की दो पेटियां मंगवाई हैं, अब यह मत कहना कि मेरे लड़के ने दारू पीने से मना किया है... और सुन, लड़कों की बातें नहीं मानते... तेरा लड़का अभी बच्चा है, उसे क्या पता दारू पीकर ललकारा मारने में क्या आनंद है ? लम्बी, लपेटी गाली का क्या मतलब है ? पीकर घरवाली को पीटने में क्या मज़ा है... वो तो अभी बच्चा है, पर तू तो बच्चा नहीं... *(जाते हुए, अपने आप से)* अभी जन्मे हैं नहीं, मुकाबला बड़ों से करते हैं... *(मिस्तरी एक तरफ से और ठेकेदार दूसरी तरफ से जाता है)* चींटियों के भी पर निकल आए हैं, फ्लश वाली लेटरीन चाहिए, पर्देवाला गुसलखाना चाहिए, बनानी हैं तुम्हारी फ्लश... जात की कोढ़किरली, शहतीरों से जफ्फी... *(लड़का मंच पर आता है और दर्शकों को संबोधित करता है।)*

लड़का : ठेकेदार बापू की बातें सुनकर हैरान भी हुआ और मजाक भी उड़ाया, पर मेरे लिए अब यह सब कुछ मजाक नहीं है। मैं जान गया हूं कि जो व्यवस्था अब चल रही है, इसमें तीन किस्म के लोग हैं, एक वो जिन्हें इस समाज में सबकुछ मिला... सुख, आराम, ऐशपरस्ती... दूसरे वे जिन्होंने अपने दुख-सुख को अपनी तक़दीर मान लिया... और तीसरे वे जो इसमें बदलाव की मांग करते हैं, जिनका संकल्प है कि एक ऐसा बराबरी वाला समाज बने जहां हर एक को आगे बढ़ने के लिए बराबर की सुविधाएं मिलें...

मिस्तरी : *(अपने आप से बातें करता है, जश्न से वापिस आया है।)* कह रहा था, मिस्तरी रामलाल, कल से तूने एक बड़ी बिल्डिंग उसारने का काम शुरू करना है... सात मंज़िलों वाली बिल्डिंग... मंत्री उसका नींव-पत्थर रखेगा। वो क्यों रखेगा ? बनियों का पुत्र बेशक पैसे के दम पर मंत्री बन गया है, तराजू में सौदा तोलने वाला... वो क्यों नींव पत्थर रखेगा ? नींव पत्थर मैं रखूंगा और करंडी से पलस्तर लगाऊंगा, करंडी एक मिस्तरी का औजार है, वह उसे सलाम करता है, सम्मान देता है, विश्वकर्मा दिवस पर उसकी पूजा करता है... भला मंत्री क्यों नींव पत्थर रखेगा, जिसे यह तक पता नहीं कि 'मसाला' बनाते

वक़्त सीमेंट कितना डालना है... वो नींव पत्थर रखेगा ? हुंअ... फिर बड़ी बिल्डिंग बनेगी, सीढ़ियों के साथ-साथ लिफ्ट भी लगेगी, मोटे पेट वाले सेठ सीढ़ियां नहीं चढ़ सकते, उनका सांस फूल जाता है, दिल धक-धक करने लगता है, ऊपर जाने के लिए लिफ्ट लगेगी, वाह, दुनिया कहां से कहां पहुंच गई है, बटन दबाओ, ऊपर चढ़ जाओ, बटन दबाओ, नीचे आ जाओ... रामलाल मिस्तरी, यह सबकुछ तू बनाएगा, पर तेरा अपना घर, एक झोंपड़ी जैसा घर, सात फुट ऊंचा, तू सात मंजिल ऊंची बिल्डिंग बनाने वाला... 'ऐ दुनिया बनाने वाले, ये तुमने कैसी दुनिया बनाई'... तू बिल्डिंग बनाएगा... जिसके संगमरमर के फर्श होंगे... संग का मतलब पत्थर... मरमरी पत्थर, किसी औरत के जिस्म जैसा मुलायम... उनकी औरतें भी मुलायम... फर्श भी मुलायम... मैं नहीं बनाऊंगा वो घर, जब तक मेरा घर नहीं बनता... लड़का ठीक कहता है... हर एक को घर चाहिए... यही सामाजिक इंसाफ है... यही बराबरी है... यह करंडी मेरे हाथ में है... मंत्री के हाथ में नहीं... मंत्री रेशमी खद्दर पहनने वाला, पाखंडी... कहता है, मिस्तरी तू सपनेबाज हो गया है, हां, तो ही कुछ बनाएगा, ये करंडी ज़िंदाबाद... मेहनतकश का हर औज़ार ज़िंदाबाद... विश्वकर्मा ज़िंदाबाद... *(बाहर जाता है) (मां और पुत्र का वार्तालाप)*

लड़का : मां, बापू रात फिर पीकर आया था... पर उसकी एक-एक बात कमाल की थी...

मां : तू भी बड़े मज़े से सुन रहा था-

लड़का : हां, मुझे मज़ा आ रहा था क्योंकि हर बात में बड़ा सच था... मां, मुझे फ़ख्र है कि मेरा बापू ईमानदार और स्वाभिमानी कारीगर है, पर है बहुत गुस्साखोर, कभी-कभी जब वो तेरे पर हाथ उठाता है तो मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता।

मां : तू बुरा न मनाया कर, क्योंकि मैं भी बुरा नहीं मनाती... उसके हाथ उठाने से मेरी बहुत-सी यादें जुड़ी हुई हैं।

लड़का : यादें ?

मां : हां बेटा, यादें, वह दिन मुझे कल की तरह याद है... एक बड़ी बिल्डिंग बन रही थी... मैं वहां ईंटें ढो रही थी, तेरा बापू वहां मिस्तरी था।

लड़का : मां, तू ईंटें ढोती थी ?

मां : हां बेटा, हम बहुत गरीब थे, मां हमेशा बीमार रहती थी, बापू जो कमाता उसकी दारू पी जाता... मैं ईंटें ढोती थी, तेरा बापू वहां मिस्तरी था, तेरा बापू दीवारें चिनता, प्लस्तर लगाता... ठेकेदार का मुंशी सारा हिसाब-किताब रखता था... मरियल सड़ियल, पर उसकी आंख बड़ी मैली थी... मेरी उम्र उस वक़्त बमुश्किल सोलह बरस रही होगी। मैं सिर पर ईंटें उठाए सीढ़ियां चढ़ रही थी, बल खाती सीढ़ियां। उसने बुरी हरकत करनी चाही... मैंने उसे परे धकेला, तेरा बापू ऊपर काम करता हुआ देख रहा था, वो उसी वक़्त नीचे आ गया, उसके हाथ में ईंटें तोड़ने वाली हथौड़ी थी, उसने मुंशी को ललकारा। मुंशी ढीठ की तरह कहने लगा, 'मिस्तरी, तू क्यों गुस्सा होता है, तेरी भला ये क्या लगती है ?' तेरे बापू ने पता है क्या कहा...

लड़का : क्या कहा ?

मां : ये मेरी मजदूर साथी है, मेरी सबकुछ लगती है...

लड़का : वाह... क्या खूब कहा बापू ने... मेहनतकश लोगों की एकता की सोच...

मां : इतने में और मज़दूर भी इकट्ठे हो गए... ठेकेदार भी आ गया... मुश्किल से तेरे बापू का गुस्सा ठंडा किया... नहीं तो मुंशी की मौत आई खड़ी थी... एक चोट की ज़रूरत थी...

लड़का : फिर क्या हुआ मां ?

मां : *(किसी दूसरी दुनिया में पहुंचने के अंदाज़ में)* फिर वाकई मैं ज़िंदगी में उसकी सबकुछ हो गई... भीड़ में उसके हाथ में पकड़ी हथौड़ी कहां गई किसी को कुछ नहीं पता चला, पर मैं जब नीचे आई तो वो मुझे मिल गई... वो मैंने संभालकर रखी है... तू देखेगा ?

लड़का : हां मां। *(मां जाती है)*

लड़का : *(अपने आप से)* मां के चेहरे का जलवा देखने वाला था... किसी टी.वी. या फिल्म के फ्लैशबैक की तरह मैं भी सबकुछ देख रहा था... एक सोलह साल की मजदूर लड़की ईंटें सिर पर उठाए हुए... मिस्तरी का यह कहना, मेरी वो सबकुछ लगती है... मेरे साथ काम करने वाली... बल खाती सीढ़ियों में मुंशी का मां से अश्लील हरकत करना और मुंशी का कहना, 'अरे मिस्तरी, ये तेरी क्या लगती है, तू बीच में क्यों आता है' और मिस्तरी का कहना, 'मेरी

सबकुछ लगती है, ये मेरी मज़दूर साथी है'...

(मां आती है)

मां : बेटा देख, ये वही हथौड़ी है...

लड़का : *(देखता है, और भावुक हो जाता है)* मां तुझे पता है, मज़दूरों का एक झंडा है, जिसकी रहनुमाई में मज़दूरों ने अपना राज कायम किया था, उस झंडे के दरम्यान एक दरांती और हथौड़ा था, इस हथौड़ी का बड़ा रूप...

(एक विशेष मुद्रा में फ्रीज़ होते हैं, मिस्तरी बाहर से आता है, मां हथौड़ी को पल्लू में छिपा लेती है।)

लड़का : आज मिठाई का डिब्बा किस खुशी में?

मिस्तरी : तुझे नहीं पता? आज विश्वकर्मा दिवस है, हर कारीगर अपने औज़ारों की पूजा करता है, थैले में सब औज़ार हैं, चलो मेरे साथ।

लड़का : नहीं बापू, आज पूजा पहले घर में करनी है।

मिस्तरी : घर में करनी है?

लड़का : तेरे पास सभी औज़ार हैं... कोई नई बिल्डिंग उसारने के लिए... पर मां के पास एक हथियारों जैसा औज़ार है, नया समाज बनाने के लिए...

मिस्तरी : वो कौन-सा?

लड़का : मां, दिखा तो बापू को वो हथियार।

मां : नहीं, तेरा बापू पहले मेरा मुंह मीठा करवाए।

मिस्तरी : अरे क्या बुझारतें बुझा रहे हो मां-बेटा?

लड़का : बापू, पहले मुंह मीठा...

(मां पल्लू के नीचे से हथौड़ी निकालती है, बेटा बापू को देता है... बापू देखता है...)

लड़का : बापू, इसे पहचानता है?

मिस्तरी : अरे ये तो मेरी हथौड़ी है... ये हत्था, इसमें लगाए फांस... मजबूत हत्था, अरे कम्बख़्त, ये तुझे कहां से मिली?

लड़का : बापू, याद कर... बीस साल पहले तू तीसरी मंज़िल पर काम कर रहा था... मां ईंटें ढो रही थी... ठेकेदार का मुंशी था, उसने मां से बुरी हरकत करने की कोशिश की थी... याद कर बापू तेरे हाथ में हथौड़ी थी... तू गुस्से में था, जैसे मुंशी का सिर फोड़ देना हो... काम कर रहे मज़दूरों ने तुझे मुश्किल से काबू में किया था... तेरे हाथ में

पकड़ी ये हथौड़ी पता नहीं किस वक़्त गिर गई... तीसरी मंज़िल से बिल्कुल नीचे... याद कर बापू...

मिस्तरी : *(जैसे सबकुछ याद हो आया हो)* हां याद आया, मैं इस हथौड़ी को बहुत देर तक ढूंढता रहा... पर ये नहीं मिली।

मां : मिलती कहां से ? मैंने तो इसे सीने से लगाकर रखा था... पल्लू में छिपाकर... यह मेरे लिए आपकी दी हुई, ज़िंदगी की सबसे कीमती सौगात है...

(मिस्तरी हथौड़ी को विशेष मुद्रा में ऊपर उठाता है, मां और पुत्र ऊपर की तरफ देखे हुए फ्रीज़ होते हैं।)

मंच के पीछे से गीत के शब्द-

हम मेहनतकश जब दुनिया से,
अपना हिस्सा मांगेंगे,
इक खेत नहीं, इक मुल्क नहीं,
हम सारी दुनिया मांगेंगे।

लड़का : नहीं बापू, आज हथियार को इतने ढीले हाथों से पकड़ने का वक़्त नहीं है बल्कि इसे ताकत से ऊंचा उठाने का वक़्त है।